हिन्दी विभाग का ऐतिहासिक आयोजन

तृतीय लिंग विमशः कल, आज और कल विषय पर

अंतरराष्ट्रीय सेमीनार सम्पन्न

मैट्स यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग द्वारा दिनांक 3 और 4 फरवरी 2023 को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय था **तृतीय लिंग विमर्श : कल, आज और कल,** यह छत्तीसगढ़ राज्य का तृतीय लिंग विमर्श विषय पर प्रथम अंतरराष्ट्रीय आयोजन था। देश व प्रदेश के उभयलिंगी समुदाय के उत्थान के उद्देश्य से आयोजित इस सेमीनार में छत्तीसगढ़ सहित देश व विदेश के प्रसिद्ध साहित्यकार, विषय विशेषज्ञ तथा तृतीय लिंग समुदाय के प्रतिनिधिगणों ने हिस्सा लिया। इस संगोष्ठी की चर्चा पूरे देश में हुई जिसका दो दिनों तक लाइव प्रसारण यूट्यूब में किया गया। संगोष्ठी में अनेक ज्वलंत मुद्दों पर विद्वानों और उभयलिंग समुदाय के लोगों ने अपने स्वर मुखर किए। देशभर से 150 से भी ज्यादा शोधार्थियों और प्राध्यापकों ने शोध पत्र प्रेषित किए और सौ से भी ज्यादा विद्वानों ने उपस्थिति दर्ज कराई। मुख्य अतिथि के रूप में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केशरी लाल वर्मा, अमेरिका के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. प्रेम भारद्वाज, तृतीय लिंग विमर्श की प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. लता अग्रवाल (भोपाल), विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज उत्तप्रदेश के अध्यक्ष डॉ. शेख शहाबुद्दीन, कॉटन यूनिवर्सिटी, गोवाहाटी, असम की प्राध्यापक डॉ.

नूरजहां रहमतुल्ला, छत्तीसगढ़ तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड की सदस्य एवं पं. रविशंकर शुक्ल सम्मान से सम्मानित सुश्री विद्या राजपूत, छत्तीसगढ़ तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड की सदस्य सुश्री रवीना बरिहा, देश की प्रथम उभयलिंगी ज्योतिषी भैरवी अमरानी थी। विभिन्न सत्रों के अध्यक्ष और निर्णायकों में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र और समाजकार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एन कुजूर, सहायक प्राध्यापक श्री डिसेंट साहू, वरिष्ठ महिला साहित्यकार डॉ. जया जादवानी, डॉ. उर्मिला शुक्ल, कल्याण महाविद्यालय भिलाई के हिन्दी

विभाग के

विभागाध्यक्ष एवं साहित्यकार डॉ. सुधीर शर्मा, माता शबरी नवीन कन्या महाविद्यालय के राजनीति विभाग की प्राध्यापक डॉ. नाज बेंजामिन प्रमुख रूप से उपस्थित थीं।

नवभारत
छत्तीसगढ़ • ओडिशा
Rajdhani - 06 Feb 2023 - 06raj2
epaper.navabharat.news

तृतीय लिंग समुदाय को भी हम अपना मानें: प्रो. केशरीलाल वर्मा

मैट्स यूनिवर्सिटी में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

रायपुर। मैट्स यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग द्वारा 'तृतीय लिंग विमर्श: कल, आज और कल' विषय पर हुई दो दिनी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केशरीलाल वर्मा ने कहा है कि समाज को चाहिए कि वह तृतीय लिंग समुदाय की भावनाओं को समझे और उनके साथ सामान्य व्यवहार करे न कि स्पेसिफिक मानकर अलग व्यवहार करे। समस्या तब आती है जब हम इन्हें अपना नहीं समझते।

इस दौरान मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. यादव पर केंद्रीत पुस्तक 'मूर्त से अमूर्त तक प्रो. के.पी. यादव' का विमोचन भी हुआ। अध्यक्षता कर रहे पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. एन. कुजूर ने कहा कि तृतीय लिंग समुदाय को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने की दिशा में छत्तीसगढ़ ऐसा पहला राज्य है जिसने सकारात्मक कदम उठाया है। तृतीय सत्र की अध्यक्षता विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज के अध्यक्ष डॉ. शेख शहाबुद्दीन नियाम मोहम्मद शेख ने की। कॉटन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी-असम से प्राध्यापक डॉ. नूरजहां रहमातुल्लाह, अंचल की साहित्यकार डॉ. जया जादवानी व कल्याण महाविद्यालय भिलाई से प्राध्यापक डॉ. सुधीर शर्मा विशिष्ट अतिथि रहे।

समारोह में डॉ. रेशमा अंसारी, छत्तीसगढ़ तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड की सदस्य रवीना बरिहा व विद्या राजपूत, प्राध्यापक डॉ. डिसेंट साहू, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. प्रेम भारद्वाज, कथाकार डॉ. लता अग्रवाल, मैट्स यूनिवर्सिटी डीन एकेडमिक डॉ. ज्योति जनस्वामी, उभयलिंगी ज्योतिषी भैरवी अमरानी, ट्रांसमैन पॉपी देवनाथ समेत कई राज्यों के शोधार्थी, विद्यार्थी, गणमान्य जन व तृतीय लिंग समुदाय के सदस्य बड़ी संख्या में शामिल हुए। संचालन सहायक प्राध्यापक डॉ. सुनीता तिवारी ने व आभार प्रदर्शन सह प्राध्यापक डॉ. कमलेश गोगिया ने किया।

दैनिक दबंग स्वर
एक नई सोच के साथ...

शरीर नहीं, मन और आत्मा से देखिए

दबंग स्वर

तृतीय लिंग विमर्श पर अंतरराष्ट्रीय सेमीनार

मैट्स यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

तृतीय लिंग समुदाय को भी हम अपना मानें: प्रो. वर्मा

प्रदेश टुडे संवाददाता, रायपुर

तृतीय लिंग व्यक्तियों ने साझा किया अपना दर्द

IAN 24
अस्पा संदेश

मैट्स यूनिवर्सिटी में तृतीय लिंग विमर्श पर अंतरराष्ट्रीय सेमीनार का हुआ आयोजन...

शरीर नहीं, मन और आत्मा से देखिए: तृतीय लिंग विमर्श पर अंतरराष्ट्रीय सेमीनार

- हिन्दी विभाग की विभागाध्यक्ष डा. रेशमा अंसारी ने स्वागत भाषण देते हुए आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला

रायपुर (जसेरि)। समय के साथ-साथ समाज में धीरे-धीरे बदलाव आ रहे हैं लेकिन अभी भी तृतीय लिंग समुदाय के संबंध में अनेक चुनौतियाँ और समस्याएं हैं। तृतीय लिंग के संबंध में अभी भी लोगों की धारणाएं गलत है जिन्हें बदलने की आवश्यकता है। हमें शरीर से नहीं, हमारी आत्मा को देखिए, हमारी भी भावनाएँ हैं, संवेदनाएं हैं जिसे समझने की जरूरत है।

उपर्युक्त बातें मैट्स यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग द्वारा तृतीय लिंग विमर्श: कल, आज और कल विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमीनार में आमंत्रित अतिथियों विषय विशेषज्ञों, विद्वानों एवं शोधार्थियों ने कहीं। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि अमेरिका के प्रसिद्ध साहित्यकार, कवि एवं समालोचक डॉ. प्रेम भारद्वाज ने तृतीय लिंग के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 1994 में टीएन शेषन ने तृतीय लिंग को मतदान का अधिकार प्रदान किया था। इसके बाद सर्वोच्च न्यायालय ने 15 अप्रैल 2014 को तृतीय लिंग समुदाय को संवैधानिक अधिकार दिए। किन्नर समुदाय को भगवान श्रीराम ने वनवास के दौरान सभी को वापस लौटने कहा था लेकिन किन्नर पूरे 14 वर्ष तक वहीं प्रतीक्षा करते रहे। भगवान श्रीराम ने तब वरदान दिया था कि किन्नर जिन्हें भी आशीर्वाद देंगे उनका कभी अनिष्ट नहीं होगा। डॉ. प्रेम भारद्वाज ने महाभारत काल का भी उदाहरण दिया और कहा कि तृतीय लिंग समुदाय समाज का अहम अंग है और उन्हें भी वही सारे अधिकार मिलने चाहिए जो सामान्य नागरिक को मिलते हैं। तृतीय लिंग विमर्श की प्रसिद्ध साहित्यकार भोपाल की डा. लता अग्रवाल ने कहा तृतीय लिंग समुदाय के संबंध में गहराई से विवेचना प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि तृतीय लिंग के अध्ययन से कई नए पहलू इस समुदाय को लेकर सामने आए जिनसे अब तक शोधार्थी सामने आए। डा. लता अग्रवाल ने तृतीय लिंग समुदाय के बारे में विस्तार से जानकारी दी और कहा कि हमें इस समुदाय के लोगों की पीड़ा, उनके दुख-दर्द को समझना चाहिए।

मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति श्री गजराज पगारिया ने कहा कि हमारा प्रयास है कि हम अपने सामाजिक कर्तव्यों के निर्वहन की दिशा में रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन करें। तृतीय लिंग समुदाय भी समाज का अहम हिस्सा है जिसे आगे बढ़ाने का पूरा प्रयास किया जाना चाहिए। मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. के.पी. यादव ने तृतीय लिंग समुदाय से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकश डाला। उन्होंने कहा कि समाज से उपेक्षित रहे इस समुदाय को भी समाज की मुख्य धारा में आने का पूरा अधिकार है।

छत्तीसगढ़ राज्य तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड की सदस्य एवं राज्य के पं. रविशंकर शुक्ल सम्मान से सम्मानित विद्या राजपूत ने कहा छत्तीसगढ़ के तृतीय लिंग समुदाय की उपलब्धियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने अपने जीवन के अनुभव भी साझा किए और कहा कि हमारा भी मन, आत्मा औरर हमारी भी संवेदनाएं हैं, हममें और आपमें कोई फर्क नहीं है, फर्क तो विचारों का है जिसे समझने की जरूरत है। छत्तीसगढ़ तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड की सदस्य रवीना बरिहा ने भारत में प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल के किन्नर विमर्श से संबंधित साहित्य पर प्रकाश डाला एवं विस्तार से प्रमाण के साथ जानकारी प्रदान की जिसकी सभी ने तालियाँ बजाकर सराहना की। देश के प्रथम उभयलिंगी ज्योतिषी भैरवी अमरानी ने तृतीय लिंग समुदाय के प्रकारों और तृतीय लिंगी व्यक्तियों के साथ होने वाले अत्याचारों पर प्रकाश डाला। ट्रांस मेन पापी देवनाथ ने भी अपने जीवन के अनुभव साझा किए। इसके पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया गया।

हिन्दी विभाग की विभागाध्यक्ष डा. रेशमा अंसारी ने स्वागत भाषण देते हुए आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न राज्यों के शोधार्थियों ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। इनमे प्रमुख रूप से संतोष कुमार भागलपुर, भारती शिमला, अनूप कुमार कोलकाता, पवन राय कोलकाता, उषाबेन परमार गुजरात, सहित अनेक राज्यों के शोधार्थी शामिल थे। इस अवसर पर विश्व हिन्दी साहित्य समिति प्रयागराज के अध्यक्ष डा. शेख शहाबुद्दीन नियाम मुहम्मद शेख, काटन विश्वविद्यालय, असम के हिन्दी विभाग की प्राध्यापक डॉ. रहमातुल्लाह, मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलसचिव श्री गोकुलनंदा पंडा, डीन एकेडमिक डॉ. ज्योति जनस्वामी सहित विश्वविद्यालय के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, देश के विभिन्न राज्यो से आए शोधार्थी, विद्वान एवं विद्यार्थीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाग के सह प्राध्यापक डॉ. कमलेश गोगिया, सहायक प्राध्यापक डॉ. सुनीता तिवारी, शोधार्थी ज्योति होता, सहायक प्राध्यापक डॉ. रमणी चंद्राकर, डा. सुपर्णा श्रीवास्तव, प्रियंका गोस्वामी ने किया।